कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी–साहित्य: स्त्री अस्मिता की पहचान

KRISHNA AGNIHOTRI KA KAHANI-SAHITY: STREE ASMITHA KI PEHACHAN

मंगलूर विश्वविद्यालय, (विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूर)

के द्वारा पीएच.डी. की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध की

रूपरेखा

SYNOPSIS

SUBMITTED TO

MANGALORE UNIVERSITY, (UNIVERSITY COLLEGE, MANGALORE)
FOR AWARD OF THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोध निर्देशिका

डॉ.नागरत्ना.एन.राव
एम.ए., पीएच.डी.
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूर

शोधार्थी

श्रीमती तस्लीमा
एम.ए.

Research Guide
Dr.NAGARATNA N RAO
Associate Professor & HOD
Department of Hindi
University College, Mangalore

Research Student
TASLEEMA

हिन्दी विभाग, स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं शोध केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूर

DEPARTMENT OF POST GRADUATE & RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE, MANGALORE
2021

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: स्त्री अस्मिता की पहचान

प्रस्तावना:

साहित्य का केन्द्र बिन्दु 'मानव जीवन' है । वह साहित्य को प्रभावित ही नहीं करता अपितु उससे प्रभावित भी होता है । मानव जीवन में घटित प्रत्येक हलचल से साहित्य को शक्ति मिलती है । इसी कारण से मानव जीवन में घटित यथार्थ को ही साहित्य में अभिव्यक्ति का विषय बना दिया जाता है अर्थात् साहित्य युगीन आवश्यकताओं के आधार पर निर्मित होता है । समकालीन हिन्दी लेखन में यह विचार दृष्टिगोचर होता है । 'हिन्दी कहानी', आज अपने ऐतिहासिक भावुकता या मनोरंजन से आगे निकल चुकी है और अब वह सीधे जिन्दगी से साक्षात्कार करती है । आधुनिक जीवन में कई विसंगतियाँ हैं जिनके कारण साहित्य में कई विमर्श चर्चित है । उनमें "नारी विमर्श" का अपना विशिष्ट स्थान है । नवीन युग के श्रेष्ठ रचनाकारों ने अपने साहित्य में स्त्री अस्मिता व अस्तित्व का प्रश्न उठाया है । उनमें कृष्णा अग्निहोत्री का लेखन सराहनीय है ।

अस्मिता शब्द को 'स्व की पहचान' अथवा 'अपने अस्तित्व की पहचान' के अर्थ में लिया जाता है । यह शब्द २०वीं शताब्दी से प्रचलन में आया जो वैयक्तिकता तथा अस्मिता से संबंधित है । जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने इतिहास, समाज, परिवार, राजनीति और संस्कृति के

आधार पर अपनी अस्मिता को पहचान लेता है । इंसान के मन में उद्भावित अस्मिता बोध उसके सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की पहचान कराता है ।

'नारी' मानव सृष्टि का अपरिहार्य अंग है । भारतीय नारी अनंत गुणों की अमूल्य रत्न है । उसमें पृथ्वी की जैसी सहनशीलता, सूर्य जैसी प्रखरता, समुद्र की गांभीर्यता, चन्द्रमा की शीतलता और पर्वतों जैसी उच्चता है । वह दया, करूणा, ममता, प्रेम और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है । भारत की पहचान नारी के त्याग और बलिदान से ही है । परन्तु विडंबना यह है कि सदियों से अपनी अस्मिता को खोजते हुई नारी स्वयं के लिए प्रश्न बन गयी है । समाज में पुरूष के समान अधिकार और सम्मान पाने के लिए वह आज भी जूझ रही है । वर्तमान युग में नारी कानूनी रूप से स्वतंत्र दिखायी देती है । लेकिन उसे सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक तौर पर पहचान नहीं मिली है, जिसकी वह हकधारिणी है । सदियों से नारी ने अपने स्व और अहं को भुलाकर अपने परिवार और समाज को ही अपना सर्वस्व माना है । उसने कभी अपनी चिंता नहीं की और न ही अपने सुख की ओर ध्यान दिया । लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसका कोई स्वाभिमान नहीं है । जब नारी ने देखा कि अपनों के लिए चाहे कितना भी मर मिटो, उन्हें उसकी कद्र नहीं तो उसे स्वयं अपनी पहचान बनानी होगी । इसके लिए उसे स्वयं अपनी

सहायता करनी होगी । तब उसमें जो पहचान बनाने की जागृति आयी वही उसकी अस्मिता की पहचान है । नारी-लेखन का केन्द्र-बिन्दु है नारी को नारी की पहचान कराना ।

शोध विषय का महत्व एवं उद्देश्य

एक स्त्री होने के नाते मेरे मन में हमेशा यह जिज्ञासा बनी रहती थी कि 'स्त्री कौन है?', 'इस समाज में स्त्री का स्थान क्या है?', 'वैयक्तिक तथा सामाजिक स्तर पर स्त्री का अस्तित्व क्या है?' मेरे अंतर्मन में हमेशा यह इच्छा थी कि इस विषय के बारे में गहन रूप से मैं अध्ययन करूँ, इसलिए मैंने कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में शोध करने का निर्णय लिया और अपना शोध विषय "कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: स्त्री अस्मिता की पहचान" चुना । मैंने हिन्दी साहित्य में कहानी विधा को इसलिए चुना है कि हिन्दी उपन्यासों की तुलना में हिन्दी कहानी साहित्य में अस्तित्ववादी कहानी पर अनुसंधान कम हुआ है । मैंने अपनी शोध निदेशिका के मार्गदर्शन में हिन्दी कहानी साहित्य विधा में स्त्री अस्मिता के लिए आवाज़ उठानेवाली तथा साहित्य जगत में अपनी अस्मिता के लिए निरंतर संघर्ष करनेवाली लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों पर अध्ययन करने का दृढ़ संकल्प किया । इसी संदर्भ मैंने उनकी कहानियों में से ४५ कहानियों को चुना जिनमें स्त्री अस्मिता के विषय का चित्रण है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध 'कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: स्त्री अस्मिता की पहचान' गहन एवं विस्तृत रूप से किया गया एक मौलिक शोध कार्य है । कृष्णा अग्निहोत्री अपनी कहानियों में निरंतर पुरूष वर्चस्व के विरूद्ध नारी के स्वाभिमान और संघर्ष के पक्ष में खड़ी रही है । इस दृष्टि से यह शोधपरक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

कृष्णा अग्निहोत्री जी की कहानियों के इस शोध कार्य के माध्यम से मैंने सदियों से दबी या शोषित स्त्री की अस्मिता को जानने की कोशिश की हैं । यह जानने का प्रयास किया है कि आखिर स्त्री अस्मिता के प्रश्न को स्त्री और यह समाज कब उत्तर दे पायेगा । अब तो स्त्री को न्याय मिलना चाहिए । इन सभी बातों का विश्लेषण और विवेचन कर स्त्री अस्मिता की सार्थकता को न्याय दिलाने का प्रयास किया है ।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ति

शोध कार्य के संदर्भ में कहा जाए तो शोध की कोई सीमा एवं व्याप्ति नहीं होती है । जहाँ एक व्यक्ति का शोध कार्य समाप्त होता है, दूसरे व्यक्ति का शोध कार्य वहीं से आरंभ होता है । कहानीकार कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य अत्यंत समृद्ध है । अब तक उनकी १७ कहानी संग्रह प्रकाशित है । उनके १५ कहानी संग्रह को सन् २०१३ में 'कठौती' शीर्षक से प्रथम, द्वितीय और तृतीय अंकों में संकलित किया गया है । इसके १७ कहानी संग्रह में कुल मिलाकर २१० कहानियाँ हैं । कृष्णा अग्निहोत्री की समग्र रचनाओं पर अभी तक १९ शोध कार्य हुए हैं । उनके कहानी साहित्य में स्त्री अस्मिता से जुड़ी कहानियों का अध्ययन करना ही इस शोध कार्य की सीमा एवं व्याप्ति है । कृष्णाजी ने जहाँ स्त्री-अस्मिता के प्रश्न को उठाया है अथवा जिनमें स्त्री अस्मिता से संबंधित विषय का वर्णन हुआ है, मैंने केवल उन्हीं कहानियों को शोध कार्य के लिए चयन किया जिसकी सीमा में ४५ कहानियाँ सम्मिलित हैं । इस प्रकार मैंने अपने अध्ययन को कृष्णाजी की ४५ कहानियों तक सीमित रखा है ताकि मैं इस विषय के साथ न्याय कर सकूँ ।

पूर्ववर्ती शोध कार्य

इस शोध विषय से संबंधित कई शोध मुझसे पूर्व किये जा चुके हैं । उन्हें पढ़ने, समझने के पश्चात ही मैंने अपने विषय का चयन किया जिसमें स्त्री अस्मिता को लेकर लिखी कहानियों को मेरे अध्ययन सीमा में सम्मिलित किया । कृष्णा अग्निहोत्री जी के साहित्य पर मुझसे पहले १९ शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं, जिनका विवरण इस प्रकार हैं-

- "कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन", प्रिया सुनील, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान , दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास ।
- "कृष्णा अग्निहोत्री के साहित्य में नारी संघर्ष", दीपिका शर्मा, जम्मू विश्वविद्यालय ।
- "कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में सामाजिक चेतना", नीतू.एस., केरला विश्वविद्यालय ।
- "कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श", सीमा सिंह, शिमला विश्वविद्यालय ।
- "कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में सामाजिक चेतना", जयंती, काकतीय विश्वविद्यालय ।
- "कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी विमर्श", अनुराधा, पंजाब विश्वविद्यालय ।

- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास में नारी शक्ति: एक अध्ययन”, हस्ना खानम, बैंगलूर विश्वविद्यालय ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य का अनुशीलन”, हर्षा सिंह, नागपुर विश्वविद्यालय ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में कामकाजी नारी”, शशिबाला, वनस्थली विश्वविद्यालय ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी”, सरताज, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में मूल्यपरक अध्ययन”, नलिनी शर्मा, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प”, ज्योति शर्मा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना”, भुवनेश्वरी भट्ट, मोहनलाल सुखाडिया, उदयपुर ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के नारी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन”, पायल सिंह, अलीगढ़ विश्वविद्यालय ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी”, बालाजी श्रीपति भुरे, मराठावाड़ा विश्वविद्यालय नांदेड ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री का कथा साहित्य”, उषा पंडुलिक शिरोडे, मालेगांव विश्वविद्यालय ।

- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याओं का आलोचनात्मक अनुशीलन”, आनंद शर्मा, सुशीला महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में यथार्थ: एक अनुशीलन”, रेखा, देवी अहल्या विश्वविद्यालय, इंदौर ।
- “कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में चित्रित नारियों की अवधारणा”, श्याम सुंदर, छत्रपति शिवाजी विश्वविद्यालय ।

मेरी जानकारी के अनुसार कृष्णा अग्निहोत्री के कहानी साहित्य पर अभी तक केवल ४ शोध कार्य हुए हैं । जिसमें लेखिका के सन् २०१३ तक प्रकाशित रचनाओं पर ही विश्लेषणात्मक अध्ययन हुआ है । किन्तु मैंने अपने शोध अध्ययन में लेखिका के अब तक (सन् २०१९) प्रकाशित स्त्री अस्मिता से संबंधित कहानियों को गंभीरता से अध्ययन किया है । यही कृष्णा अग्निहोत्री से संबंधित मेरे शोध की नवीनता है और विषय की दृष्टि से मेरा शोध कार्य उपरोक्त शोधकार्यों से भिन्न है । मैंने उनकी कहानियों में चित्रित स्त्री अस्मिता को पहचानते हुए, उसके विविध पहलुओं का गहन अध्ययन करने की कोशिश की है ।

सामग्री संकलन के स्रोत:

प्रस्तुत शोध कार्य की सामग्री संकलन करने के लिए अमन प्रकाशन की मदद स्मरणीय है । अमन प्रकाशन द्वारा संकलित कृष्णा अग्निहोत्री के 'कहानी समग्र' मेरे लिए सुविधाजनक रहा । अमन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कृष्णा अग्निहोत्री के अन्य सभी रचनाएँ मुझे सुलभ रूप से उपलब्ध हुई । इसके अलावा मैंने देश के विविध क्षेत्रों में स्थित ग्रंथालयों की सहायता भी ली जैसे इंदौर के अहल्या विश्वविद्यालय का ग्रंथालय और डॉ.सरजूप्रसाद पुस्तकालय, उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग का ग्रंथालय और महाराजा जीवाजीराव पुस्तकालय, बेंगलूर के केन्द्रीय ग्रंथालय, मंगलूर विश्वविद्यालय के हिन्दी स्नातकोत्तर विभाग का ग्रंथालय आदि । इन विश्वविद्यालयों में स्थित ग्रंथालयों एवं हिन्दी विभागों में जाकर मैंने शोध विषय से संबंधित पुस्तकों की छानबीन की, सामग्री जुटाई जो मेरे शोध के लिए काफी लाभप्रद रही । इसके अतिरिक्त मैंने विभिन्न शोध पत्रिकाओं तथा अंतर्जाल से भी सामग्री संकलन किया है ।

शोध कार्य की पद्धतियाँ

प्रत्येक शोध की सफलता उसके लिए उपयुक्त पद्धति पर आधारित है । वैसे तो साहित्यिक शोध की कई पद्धतियाँ हैं । पर मेरा शोध कार्य निम्न पद्धतियों के आधार पर सफल हुआ है ।

1. अनुसंधानात्मक पद्धति:-

अनुसंधान का तात्पर्य है 'अन्वेषण' । मैंने कृष्णा जी की कहानियों के नारी पात्रों को समझने के लिए इस पद्धति का निर्वाह किया है जिसमें मैंने कहानियों को पढ़कर उन पात्रों की परिस्थितियों का आंकलन किया है ।

2. आलोचनात्मक पद्धति:-

अनुसंधान को अर्थपूर्ण और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए मैंने आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है । कृष्णा जी की प्रत्येक कहानी की वस्तु को समझकर, उसके विषय का विवेचन कर उन नारी पात्रों के संघर्ष के विभिन्न पहलुओं के तह तक जा सकी ।

3. भाषा वैज्ञानिक पद्धति:-

कहानियों की भाषा का विविध आयाम अध्ययन करने के लिए भाषा वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया गया है जिसमें मैंने उनकी प्रत्येक कहानी के भाषा शिल्प को समझने का प्रयास किया है ।

कार्य का विभाजन

2015-16 में मंगलूर विश्वविद्यालय में अपना नाम शोध कार्य के लिए पंजीकृत किया । 2015 से अब तक मैंने जो भी कार्य किया उसका सिलसिलेवार ब्योरा इस प्रकार है- पहले छः महीने यानी 2015फरवरी से अगस्त तक पीएच.डी. का कोर्स वर्क की प्रक्रिया को सम्पन्न किया । इस दौरान मैंने नियमित रूप से शोध प्रक्रिया और शोध प्रविधि को समझा, जिससे मुझे अपने शोध में काफी सहायता मिली ।

प्रथम वर्ष:

पीएच.डी. कोर्स वर्क के पश्चात इस वर्ष में मैंने सामग्री संकलन किया तथा सामग्री के आधार पर विषय का वर्गीकरण किया । कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों को पढ़ा, समझा और उसके आधार पर कहानी की वस्तु लिखना प्रारंभ किया । इससे मुझे कृष्णाजी के नारी पात्रों को समझने में सुविधा हुई ।

द्वितीय वर्ष:

इस वर्ष मैंने अपनी संकलित सामग्री के आधार पर निर्धारित विषय से संबंधित टिप्पणी तैयार की तथा प्रथम, द्‌वितीय और तृतीय अध्यायों का लेखन कार्य किया । कहानियों की वस्तु का विश्लेषण करते हुए, शोध निर्देशक के निर्देशानुसार कार्य सम्पन्न किया ।

तृतीय वर्ष:

अपने शोध कार्य के इस चरण में मैंने शोध विषय से संबंधित चतुर्थ, पंचम और षष्टम अध्यायों का लेखन कार्य पूर्ण किया और लेखिका से मिलकर उनका साक्षात्कार भी किया । उनसे मिलकर उनके साहित्य से संबंधित मेरी कई शंकाएँ दूर हुई । उनसे मिलने के बाद मेरे लेखन और भी स्पष्ट हो गया । इसी दौरान मेरे लेखन का टंकण कार्य भी साथ-साथ चलता रहा ।

चतुर्थ वर्ष:

इस समय मैंने सप्तम अध्याय का लेखन कार्य पूर्ति करके, सभी अध्यायों को अंतिम रूप देकर परीक्षण के लिए शोध निदेशिका को दिया और परीक्षण के बाद टंकण कार्य के लिए दिया । पूर्व टंकित सामग्री का प्रूफ रीडिंग भी किया ।

अध्याय- विभाजन

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में हुई सूचना प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप भारत के जनजीवन में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ । शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के कारण स्त्री अस्मिता को स्वर मिला । लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियाँ इस परिवर्तित परिवेश को अलग स्वरूप से प्रस्तुत करती है । “स्त्री अस्मिता” को समझने के लिए स्त्री के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान को समझना ज़रूरी है । इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध का अध्ययन किया । अध्ययन की सुविधा के लिए इस समग्र शोध विषय को मैंने कुल सात अध्यायों में बाँटा है जो इस प्रकार है:-

प्रथम अध्याय:

स्त्री अस्मिता का विवेचन

प्रस्तावना

1.1. ‘अस्मिता’ का अर्थ एवं परिभाषा

1.1.1. कोशगत अर्थ

1.1.2. शाब्दिक अर्थ

1.1.3. परिभाषा

1.2. स्त्री अस्मिता की संघर्ष यात्रा

1.2.1. भारतीय संदर्भ में

1.2.1.1. स्त्री शिक्षा

1.2.1.2. अस्मिता की संघर्ष यात्रा में स्त्री लेखन

1.2.2. पाश्चात्य संदर्भ में

1.2.2.1. स्त्रीवादी आंदोलन

1.2.2.2. स्त्रीवादी लेखन

1.3. स्त्री अस्मिता और हिन्दी महिला लेखन

1.3.1. दीप्ति खंडेलवाल

1.3.2. मालती जोशी

1.3.3. मृदुला गर्ग

1.3.4. चंद्रकांता

1.3.5. सूर्यबाला

1.3.6. मैत्रेयी पुष्पा

1.3.7. मेहरून्नीसा परवेज़

1.3.8. नासिरा शर्मा

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय:

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: वस्तु विश्लेषण

प्रस्तावना

2.1. क्रॉस नम्बर बीस

2.2. दो रीति आँखें

2.3. कुलकलंकिनी

2.4. सौदा

2.5. वीराने

2.6. ग्रामसेविका

2.7. स्वाभिमान

2.8. बिखराव

2.9. प्रेतों का फतवा

2.10. नफीसा चल पड़ी

2.11. रमकलिया

2.12. दौड़

2.13. प्रतिबद्धता

2.14. खुली राह बंद दरवाज़ा

2.15. जीना-मरना

2.16. एक थी लड़की

2.17. बया का घोंसला

2.18. सिसकते सपनों की शाम

2.19. अभिशप्त

2.20. एक नया पाथेय

2.21. कीमत

2.22. खत जो गुमनाम थे

2.23. गुबार

2.24. पारस

2.25. होना ही था

2.26. उसका इतिहास

2.27. प्रेमाश्रय

2.28. एक और मीरा

2.29. एक भटकता मन

2.30. माथे का आँचल

2.31. बुरी औरत

2.32. झुर्रियों की पीड़ा

2.33. एक लड़की प्यारी-प्यारी सी

2.34. एक बदमज़ा लड़की

2.35. उड़ानें ऊँची-ऊँची

2.36. अपना-अपना अस्तित्व

2.37. कुलीन

2.38. पुनरूत्थान

2.39. मैं जिन्दा हूँ

2.40. दस्त-ए-बू

2.41. कब-कौन

2.42. बदमिजाज

2.43. क्रांति

2.44. मुझे तो मुन्ना चाहिए

2.45. वहाँ दीप जले जहाँ साँझ ढले

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय:

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: सामाजिक जीवन में स्त्री अस्मिता

प्रस्तावना

3.1. समाज और स्त्री

3.1.1. प्राचीन काल और स्त्री

3.1.2. मध्यकाल और स्त्री

3.1.3. आधुनिक काल और स्त्री

3.2. कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: **सामाजिक** जीवन में स्त्री अस्मिता

3.2.1. परिवार: अर्थ और परिभाषा

3.2.1.1. पत्नी के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.2. प्रेमिका के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.3. बहन के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.4. माँ के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.5. मित्र के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.6. सास के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.1.7. बेटी के रूप में स्त्री अस्मिता

3.2.2. कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: कामकाजी नारी की अस्मिता

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय:

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: राजनीतिक जीवन में स्त्री अस्मिता

प्रस्तावना

4.1. राजनीति और स्त्री अस्मिता

4.2. राजनीति में महिला सशक्तिकरण

4.2.1. चुनाव प्रक्रिया में भागीदारी

4.2.2. राजनीतिक दलों, महिला संगठनों एवं अन्य स्वैच्छिक संगठनों का दायित्व

4.3. कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य और राजनीतिक जीवन में स्त्री अस्मिता

4.3.1. ग्राम सेविका के रूप में स्त्री अस्मिता

4.3.2. नेता व मंत्री के रूप में स्त्री अस्मिता

4.3.3. सरपंच के रूप में स्त्री अस्मिता

निष्कर्ष

पंचम अध्याय:

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: सांस्कृतिक जीवन में स्त्री अस्मिता

प्रस्तावना

5.1. संस्कृति का शाब्दिक अर्थ

5.2. परिभाषा

5.2.1. भारतीय अभिमत

5.2.2. पाश्चात्य अभिमत

5.3. कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: सांस्कृतिक जीवन में स्त्री अस्मिता

5.3.1. परंपराओं, रूढ़ियों और मूल्यों का विरोध

5.3.1.1. विवाह संबंधी मान्यताओं का विरोध

5.3.1.2. पति को धिक्कारनेवाली नारी

5.3.1.3. दहेज प्रथा का विरोध करनेवाली स्त्री

5.3.1.4. मातृत्व को नकारनेवाली स्त्री

5.3.2. धार्मिक मिथक व अंधानुकरण का विरोध

5.3.2.1. अंतर्धर्मीय विवाह व अंतर्जातीय विवाह को प्रधानता देनेवाली स्त्री

5.3.2.2. पुनर्विवाह करनेवाली स्त्री

5.3.2.3. दाह संस्कार निभानेवाली स्त्री

5.3.2.4. धार्मिक कथा-वाचन करते हुए स्त्री

निष्कर्ष

षष्टम अध्याय:

कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

प्रस्तावना

6.1. कामकाजी नारी: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.1.1. यौन उत्पीड़न

6.1.2. चारित्रिक संदेह दृष्टि

6.1.3. दोहरी भूमिका का निर्वहण

6.1.4. सहकर्मियों से असहकार भाव

6.2. पति परित्यक्ता नारी: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.2.1. सामाजिक और पारिवारिक विरोध

6.2.2. आर्थिक अभाव

6.2.3. कामुक दृष्टि

6.2.4. संतान की असुरक्षता भाव

6.3. वृद्ध नारी: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.3.1. अकेलापन

6.3.2. गुलामी जीवन

6.4. विधवा नारी: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.5. स्त्री समानता की चुनौतियाँ

6.5.1. लिंग समानता: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.5.2. पैतृक संपत्ति समानता: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.5.3. पत्नी का संपत्ति पर समान अधिकार: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

6.5.4. शैक्षणिक समानता: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ

निष्कर्ष

सप्तम अध्याय: कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों की भाषा-शैली

प्रस्तावना

7.1. भाषा

7.1.1. शब्द समूह

7.1.1.1. तत्सम शब्द

7.1.1.2. तद्भव शब्द

7.1.1.3. उर्दू शब्द

7.1.1.4. अंग्रेज़ी शब्द

7.1.1.5. देशज शब्द

7.1.1.6. हिन्दी-अंग्रेज़ी शब्दों के लोकोच्चारित रूप

7.1.1.7. शब्द युग्म

7.1.1.8. शब्दों की पुरनावृत्ति

7.1.1.9. जन-भाषा या बोल-चाल की भाषा प्रयोग

7.1.1.10. अश्लील भाषा

7.1.2. मुहावरे, कहावतें और लोकोक्तियाँ

7.1.2.1. मुहावरे

7.1.2.2. कहावतें

7.1.2.3. लोकोक्तियाँ

7.1.3. चिह्न या संकेतों का प्रयोग

7.1.3.1. पूर्ण विराम [।]

7.1.3.2. अर्ध विराम [;]

7.1.3.3. अल्प विराम [,]

7.1.3.4. उप विराम [:]

7.1.3.5. प्रश्नवाचक चिह्न [?]

7.1.3.6. विस्मयादिबोधक चिह्न [!]

7.1.3.7. योजक चिह्न [-]

7.1.3.8. उद्धरण चिह्न [“ ”]

7.1.3.9. कोष्ठक चिह्न [( )]

7.1.3.10. दीर्घ उच्चारण चिह्न [S]

7.1.3.11. पदलोप चिह्न [.......]

7.2. शैली

7.2.1. प्रतीकात्मक और बिंबात्मक शैली

7.2.2. दृश्यात्मक शैली

7.2.3. वर्णनात्मक शैली

7.2.4. आत्मकथात्मक शैली

7.2.5. पत्रात्मक शैली

7.2.6. नाटकीय शैली

7.2.7. काव्यात्मक शैली

7.2.8. भावात्मक शैली

7.2.9. व्यंग्यात्मक शैली

7.2.10. चित्रात्मक शैली

7.2.11. काल्पनिक शैली

7.2.12. लोकगीत शैली

7.2.13. शायरी शैली

7.2.14. अलंकार शैली

7.2.14.1. अनुप्रास

7.2.14.2. रूपक

7.2.14.3. उत्प्रेक्षा

7.2.14.4. मानवीकरण

7.2.15. भाषण शैली

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय:

“स्त्री अस्मिता का विवेचन”

प्रथम अध्याय में ‘अस्मिता’ शब्द का अर्थ एवं परिभाषा देते हुए, समाज में स्त्री अस्मिता की संघर्ष-यात्रा के स्वरूप की चर्चा की गयी है । ‘स्त्री अस्मिता’ पाश्चात्य एवं भारत की प्रबुद्ध नारियों एवं विचारकों के चिंतन एवं संघर्ष की उपज है, जिसका प्रमुख ध्येय पुरूष सामंती व्यवस्था द्वारा स्थापित गुलामी से स्त्री को मुक्त कराकर, उसमें स्व की पहचान जागृत कराना है । इसमें एक ओर पुरूष वर्चस्व का विरोध है तो दूसरी ओर भारतीय जीवन मूल्यों की नवीन संदर्भों में स्त्री सशक्तीकरण का प्रयास भी है । स्त्री अधिकारों के लिए एवं स्त्री सशक्तीकरण की जो बात पाश्चात्य देशों में आरंभ हुई इन्हीं आंदोलनों से प्रेरणा ग्रहण करके भारत में भी तीव्र संचरण हुआ । प्रस्तुत अध्याय में स्त्री अस्मिता की संघर्ष यात्रा को पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य और भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है । साथ ही स्त्री अस्मिता को रूपायित करने में हिन्दी महिला रचनाकारों के योगदान का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें कृष्णा अग्निहोत्री के समकालीन लेखिकाओं में दीप्ति खण्डेलवाल, मालती जोशी, मृदुला गर्ग, चन्द्रकान्ता, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, मेहरून्नीसा परवेज़, नासिरा शर्मा आदि नाम प्रमुख हैं । इन सभी लेखिकाओं ने यही माना

कि स्त्री को अपनों के साथ-साथ अपने लिए भी जीना है । वह कोई संवेदनहीन मशीन नहीं तो दिन-भर काम करती रहे और थके नहीं । उसे भी अपनी खुशी के लिए जीना है और जीना चाहिए । मेरी समझ में यही स्त्री अस्मिता का सही अर्थ है ।

द्वितीय अध्याय:

"कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: वस्तु विश्लेषण"

हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में अस्मिता पर जितनी बेबाक और गहन चिंतन देखने को मिलता है, वह स्त्री मुक्ति को नई राह दिखाती है । उन्होंने हर वर्ग, वर्ण, जाति की स्त्री की पहचान उसकी आंतरिक दुनिया से लेकर बाह्य दुनिया तक पहुँचने का प्रयास किया है । सदियों से यह समाज जो नारी को दुर्बल, अशक्त, कुंठाग्रस्त, दब्बू, अबला समझता और मानता आया था, उसे लेखिका ने नारी के प्रति उसके इस दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास किया है । नारी को अब स्वयं में आत्मविश्वास जागा है । उन्होंने अपने रचनाकर्म के माध्यम से स्त्री अस्मिता से जुड़े हुए हर प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास किया है साथ ही उन्होंने स्त्री विषय चिंतन को नयी अर्थवत्ता प्रदान करते हुए स्त्री अस्मिता के विकास की संभावनाओं को तलाशने का प्रयास है ।

प्रस्तुत अध्याय में कृष्णा अग्निहोत्री के कहानी साहित्य का वस्तु विश्लेषण किया गया है । लेखिका ने अब तक लगभग २१० कहानियाँ लिखी है । इनमें से मैंने अपने शोध कार्य के लिए स्त्री अस्मिता से जुड़े अध्याय में उनकी ४५ कहानियों को चुना । इस अध्याय के अंतर्गत कृष्णा अग्निहोत्री जी की उन्हीं कहानियों को लिया जिनमें नारी की सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक अस्मिता की चर्चा है । इनकी कहानियों के अध्ययन के बाद इनके नारी पात्रों की निम्न विशेषताएँ हैं-

इनकी नारी पढ़ी लिखी है, धैर्यवान है और आत्मविश्वास से परिपूर्ण है । कहीं-कहीं वे अनपढ़ है तो भी अन्याय का विरोध करने में सक्षम है । इनके नारी पात्रों का व्यक्तितत्व हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है । वे सभी अपने अस्तितत्व के लिए सदा संघर्षरत है । इतना ही नहीं कृष्णा जी की वृद्धाप्य नारी में भी अस्मिता भाव उनमें झलकती है । उनमें प्रतिरोधी स्वर दिखायी देता है लेकिन वे कर्मठ हैं । वे दृढ़ निश्चयी एवं तटस्थ होने के कारण संकट के समय टूटती या बिखरती नहीं, बल्कि साहस से काम लेती है । ये नारियाँ अपनी परिस्थितियों से झूझते हुए उनका सामन करती है । वे पुरूष पर निर्भर न होकर, अपने बल पर ही जीवन चलाती है । इनके स्त्री पात्र खुद पर नाज करती है और सुख-दुख को समान रूप से स्वीकारती है । तभी वे जिन्दगी को संघर्ष मानती है । अपनी इच्छा या अनिच्छा का खुद निर्णय करती है । वे सभी कला में

प्रवीण है । वे अकेली है किन्तु अबला नहीं । इस प्रकार इनकी कहानियों की वस्तु पूर्णतः स्त्री अस्मिता केन्द्रित है और वे कहीं भी उन्हें कमज़ोर नहीं ठहराती ।

तृतीय अध्याय:

“कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: सामाजिक जीवन में स्त्री अस्मिता”

इस अध्याय में कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य को दृष्टि में रखकर सामाजिक जीवन में स्त्री अस्मिता के विविध पक्ष पर प्रकाश डाला है । इसमें प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक युगीन स्त्री के सामाजिक स्थिति गति को संक्षिप्त स्वरूप से विवेचित किया है । इसके अलावा इस अध्याय में आलोच्य कहानियों के आधार पर नारी के पारिवारिक और सामाजिक स्त्री अस्मिता तथा साथ ही कामकाजी नारी के रूप में भी स्त्री अस्मिता का वर्णन है । इस अध्याय में नारी को सामाजिक या पारिवारिक रूप से स्व पहचान देने की पूरी कोशिश है । साथ ही लेखिका ने यह बताने की कोशिश की है कि जो नारी केवल रिश्तों के जरिए पहचानी जाती थी अब इन सबसे हटकर उसकी एक पहचान है । जैसे-

इनके नारी पात्र सभी रिश्तों में अपनी अस्मिता को बरकरार रखती है । वे रिश्तों से ज्यादा अपनी अस्मिता को महत्व देती है । पारिवारिक

एवं सामाजिक रिश्ते चाहे टूट जाएँ परन्तु वे अपनी अस्मिता खोने के लिए तैयार नहीं है । इस प्रकार इस अध्याय में नायिका की पहचान माँ, बेटी, बहन, प्रेमिका, सास, पत्नी आदि नामक रिश्तों के जरिए प्रकट नहीं किया है बल्कि अपनी स्वयं की व्यक्तित्व के जरिए नया पहचान दिया है ।

चतुर्थ अध्याय:

"कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: राजनीतिक जीवन में स्त्री अस्मिता"

इस अध्याय में कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य के संदर्भ में स्त्री अस्मिता के राजनीतिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है । स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से मोहभंग हो गया है । राजनीति में भ्रष्ट नेतृत्व वोट की नीति, आतंकवाद आदि का वर्चस्व है । धर्म और जाति के नाम पर राजनीतिज्ञ वोट माँगते हैं, तथा सांप्रदायिक दंगा कराते हैं । इस परिवेश से नारी हताश व निराश थी । परन्तु आधुनिक शिक्षा ने नारी को एक नयी चेतना प्रदान की । अब नारी शिक्षित और जागरूक होकर राजनीति में भी भागीदारी करने लगी है । कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार के निर्मूलन के लिए स्त्रियों को राजनीति में प्रवेश कराया । इस

अध्याय में महिला और राजनीति के प्रस्तुत स्थितिगतियों को अवलोकित करते हुए, राजनीति में महिला सशक्तीकरण की अनिवार्यता को वे प्रतिपादित करती हैं । साथ ही कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करती सक्रिय नारी चित्रित है । जैसे-

इनके कहानियों में नारी चुनाव लड़ती हैं और जीतती भी हैं । राजनीति में प्रवेश कर वह घर की भाँति अपने क्षेत्र में सुधार लाती है तथा वह शिक्षा का प्रचार करवाती है । इतना ही नहीं सामाजिक समस्या के खिलाफ वे आवाज़ भी उठाती हैं । वे भ्रष्टाचार मुक्त अधिकार स्थापना करने की ललक में हैं । वे राजकीय क्षेत्र को पैसा कमाने का माध्यम न समझकर केवल जनहित के लिए काम करती हैं । अपने क्षेत्र के लोगों के लिए प्राण त्यागने के लिए भी तैयार है । वे खुद की प्रगति के साथ दूसरों को भी प्रगति का राह दिखाती है और स्त्री-सुधार उद्देश्य को दृष्टि में रखकर कार्य योजना करती है ।

इस प्रकार लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि नारी का राजनीति में प्रवेश, समाज के लिए सकारात्मक है ।

पंचम अध्याय:

“कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: सांस्कृतिक जीवन में स्त्री अस्मिता”

भारतीय संस्कृति को विश्व की सभी संस्कृतियों से श्रेष्ठ माननेवाली लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री अपनी कहानियों में संस्कृति के नाम पर स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार का खुलकर विरोध करती है । प्रस्तुत अध्याय में ‘संस्कृति’ शब्द का अर्थ और उसकी परिभाषा की चर्चा है । साथ ही इस बात का विश्लेषण है कि किस प्रकार नारी ने सदियों से चली आयी सांस्कृतिक शोषण का विरोध कर अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखा है । इसे कई पहलुओं में देखा जा सकता है जैसे-

इनके नारी पात्र धार्मिक मूल्यों, परंपराओं, रूढ़ियों, धार्मिक मिथकों व अंधानुकरणों आदि का विरोध करती हैं । वे इस बात का प्रतिरोध करती हैं कि सदियों से विवाह, सतीत्व, दहेज या मातृत्व के नाम पर स्त्रियों को ऊँचा स्थान देकर वैयक्तिक रूप से जो उसे प्रताड़ित किया जाता रहा है वो सही नहीं है । वे इन परंपराओं का विरोध करती है । धर्म के नाम पर अंतर्जातीय या अंतर्धर्मीय विवाह करनेवाली युवतियों को ‘मर्यादा हत्या’ नाम पर जिंदा गाड़ दिया जाता था । ऐसी संस्कृति का विरोध करते हुए अंतर्जातीय व अंतर्धर्मीय विवाह का वे समर्थन भी करती

हैं । धार्मिक रूप से केवल पुत्रों को प्राप्त दाह संस्कार अधिकार स्त्रियों को भी प्राप्त कराने की कोशिश लेखिका ने अपनी कहानियों में की है । पुनर्विवाह और धार्मिक कथावाचन करते हुए वे स्त्री अस्मिता को प्रदर्शित करती है । अंततः 'संस्कृति' जो स्त्री का ही पर्याय है पर जहाँ स्त्री की भावनाओं को निर्लक्ष्य किया जाता है, उसे कृष्णा जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से एक नई पहचान दी है ।

षष्टम अध्याय:

"कृष्णा अग्निहोत्री का कहानी साहित्य: स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ"

भारतीय समाज में स्त्री और पुरूष दोनों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है । समाज के निर्माण प्रक्रिया में दोनों समान भूमिका निभाते हैं । किन्तु स्त्री युग-युगान्तरों से उत्थान-पतन की तरंगों में झूल रही है । पुरूष ने अपने पुरूषत्व के वर्चस्व से सदा एकाधिकार का प्रभुत्व स्थापित किया है । पुरूषों के अत्याचार का शिकार तथा बंधनों में बंधी स्त्री विकसित होने के बजाय अविकसित होती जा रही है । शनैः शनैः नारी अस्मिता भाव जागृत हुआ और वह घर की दहलीज को लाँघते हुए अपनी मुक्ति के लिए लड़ी । इससे उनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ आयी । इस अध्याय में स्त्री अस्मिता की चुनौतियों को कामकाजी नारी, पति-

परित्यागिता नारी, वृद्ध नारी, विधवा नारी और स्त्री समानता के परिप्रेक्ष्य में वर्गीकृत किया गया है । स्त्री चाहे किसी उम्र या वर्ग की हो जब वह अस्मिता के लिए परिवार और दुनिया से लड़ने के लिए तैयार होती है तो उसे हर जगह चुनौतियाँ ही मिलती है । इन चुनौतियों का रूप अलग होगा और उनका इरादा एक ही है कि वे किसी भी तरह स्त्री के मनोबल को तोड़ना चाहते हैं । जैसे-

कामकाजी नारी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे-

यौन उत्पीड़न, चारित्रिक संदेह दृष्टि, दोहरी भूमिका का निर्वहण, सहकर्मियों से असहकार भाव आदि ।

इसी प्रकार परित्यक्ता नारी से संबंधित चुनौतियाँ इस प्रकार हैं-

सामाजिक और पारिवारिक विरोध, आर्थिक अभाव, कामुक दृष्टि, संतान की असुरक्षता भाव आदि ।

स्त्री जीवन की सबसे दयनीय दशा है उसकी वृद्धावस्था । वृद्ध नारी की स्त्री अस्मिता की चुनौतियाँ भी कई हैं जैसे-

अकेलेपन से लड़ना, गुलामीपन को सहना आदि । इन सबके अलावा स्त्री अस्मिता की समानता की और भी चुनौतियाँ हैं जैसे-

लिंग भेद की समस्या, पैतृक संपत्ति में समानता का अधिकार न देना, पत्नी का संपत्ति पर समान अधिकार होना तथा शैक्षणिक समानता के कारण उसका तिरस्कार करना ।

इस प्रकार स्त्री चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित उसे हर प्रकार से कदम-कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है । इस अध्याय में उसी का चित्रण है ।

सप्तम अध्याय:

"कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों की भाषा-शैली"

सप्तम अध्याय में कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में प्रयुक्त भाषा-शैली के पक्ष को उजागर किया गया है । कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने अनुभवों को संप्रेषित करने के लिए सही भाषा का प्रयोग किया है तथा उनकी भाषा में जीवंतता एवं अनुभव का खुलापन है । कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में प्रयुक्त शब्द समूह, वाक्य विशिष्टता तथा शिल्प संबंधी विशेषताओं का विवरण है ।

इनकी कहानियों में तत्सम, तद्भव, उर्दू, अंग्रेज़ी, देशज, हिन्दी-अंग्रेज़ी का प्रयोग है । उन्होंने जगह-जगह पर शब्द-युग्मों, शब्दों की पुनरावृत्ति, जनभाषा या बोल-चाल की भाषा और कहीं-कहीं घटनानुकूल अश्लील भाषा का भी प्रयोग किया है ।

इनके अलावा लोक प्रचलित मुहावरे, कहावतें और लोकोक्तियों को उदाहरण सहित वे प्रस्तुत करती है । उनकी लेखन शैली के अंतर्गत प्रतीकात्मकता, दृश्यात्मकता, वर्णनात्मकता, आत्मकथात्मक, पत्रांत्मकता, नाटकीयता, काव्यात्मकता, भावात्मकता, चित्रात्मकता, काल्पनिकता तथा लोकगीत, शायरी, अलंकार और भाषण शैली का भी समयानुकूल प्रयोग मिलता है । इन सभी शैलियों को उदाहरण सहित इस अध्याय में प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है ।

उपसंहार

कृष्णा अग्निहोत्री के कहानी साहित्य में स्त्री अस्मिता की पहचान के अध्ययन के बाद जो महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए हैं, उनका संचय उपसंहार के अंतर्गत किया गया है । लेखिका की कहानियों की नायिका ने अपनी अस्मिता को तलाशने के लिए जो भूमिका निभायी है, वह उसकी सजग बौद्धिकता का परिचायक है । उपसंहार में शोध-कार्य से प्राप्त तथ्यपूर्ण विचारों को प्रस्तुत करते हुए अंत में अनुसंधान की उपलब्धियाँ और अध्ययन की नयी दिशाओं की चर्चा की गयी है ।

प्रस्तुत साधन:-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए कृष्णा अग्निहोत्री जी की रचनाएँ, आलोचनात्मक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ, शब्द-कोश, अंतर्जाल एवं अन्य सामग्री की सहायता ली गयी है ।

आधार ग्रंथ:-

1) कठौती- कहानी समग्र (भाग प्रथम), कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
2) कठौती- कहानी समग्र (भाग द्वितीय), कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
3) कठौती- कहानी समग्र (भाग तृतीय), कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
4) उडानें ऊँची-ऊँची तथा अन्य कहानियाँ, कृष्णा अग्निहोत्री, किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2016
5) एक पाती ऐसी भी, कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2019

सहायक ग्रंथ:-

1) कृष्णा अग्निहोत्री: संपूर्ण साहित्य का मूल्यांकन, डॉ.नीहार गीते, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015
2) अफसाने अपने- कहानी अपनी, कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2017
3) वर्तमान परिवेश व राष्ट्रीय चिंतन, कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2016
4) महिला अधिकार- ममता मेहरोत्रा, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014
5) रचना के आइने में रचनाकार- ऋतु भनोट, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2019
6) नारी चेतना के आयाम- डॉ.अलका प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007
7) इतिहास में स्त्री अस्मिता की तलाश, नीलिमा पाण्डेय, अध्ययन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
8) स्त्री-प्रश्न- नमिता सिंह, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2017
9) स्त्री-विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य- डॉ.के.एम. मालती, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010

10)स्त्री अस्मिता के सवाल- डॉ.प्रभा दीक्षित, साहित्य निलय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011

11) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी व कहानीकार- कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2019

12) समकालीन हिन्दी कहानी और नारी जीवन- गीता यादव, ज्ञान प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2017

13) लगता नहीं है दिल मेरा- कृष्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, दूसरा संस्करण, 2014

14) और- और- औरत- कृष्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, दूसरा संस्करण, 2011

15) एक औरत की नोटबुक- सुधा अरोड़ा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015

16) श्रृंखला की कड़ियाँ- महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1942

17) स्त्री लम्बा सफर- मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दूसरा संस्करण, 2015

18) स्त्री विमर्श की नयी दिशाएँ- डॉ.रेणुका मोरे, अलका प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010

शोध निर्देशिका	शोधार्थी
डॉ.नागरत्ना.एन.राव	तस्लीमा